Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal

Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सार्वजनिक पुस्तकालय : डिजिटल सेवाओं और अनुभवात्मक शिक्षा के नए आयाम

शोध–निर्देषक

डॉ. रेखा मर्सकोले
सहायक प्राध्यापक
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल
जिला–भोपाल (म.प्र.)

शोधार्थी

मनीषा पटेल
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
आई.ई.एस. विश्वविद्यालय, भोपाल

सार

डिजिटल युग में सार्वजनिक पुस्तकालयों की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ रही है, क्योंकि वे ज्ञान भंडार से आगे बढ़कर सामुदायिक जुड़ाव, डिजिटल समावेशन और आजीवन सीखने के केंद्र बन गए हैं। पुस्तकालय अब ई–पुस्तकों, ऑनलाइन डेटाबेस, और मेकरस्पेस जैसी डिजिटल सेवाएँ प्रदान करते हुए उपयोगकर्ताओं को नवाचार और सशक्तिकरण के लिए मंच प्रदान करते हैं। निःशुल्क इंटरनेट एक्सेस और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से वे डिजिटल डिवाइड को पाटने और वंचित समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, पुस्तकालय अनुभवात्मक शिक्षा और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाओं, डिजिटल उपकरणों और सहयोगात्मक स्थानों की पेशकश कर रहे हैं। हालाँकि, सीमित संसाधन, डिजिटल असमानता और बदलती उपयोगकर्ता अपेक्षाओं जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। फिर भी, पुस्तकालयों ने शिक्षा, नवाचार और समावेशिता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ, तकनीकी प्रगति और सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप खुद को अनुकूलित किया है।

मुख्य शब्द

सार्वजनिक पुस्तकालय, डिजिटल युग, अनुभवात्मक शिक्षा, डिजिटल समावेशन, ज्ञान भंडार, मेकरस्पेस, आभासी सेवाएँ, डिजिटल डिवाइड, सामुदायिक जुड़ाव, नवाचार।

परिचय

सार्वजनिक पुस्तकालय समकालीन समाज में अत्यधिक प्रासंगिक बने हुए हैं, जो डिजिटल युग की मांगों और उपयोगकर्ताओं की बदलती अपेक्षाओं के अनुकूल हैं। डिजिटल तकनीकों के प्रसार के साथ, पुस्तकालय हाइब्रिड स्थानों में बदल गए हैं जो पारंपरिक पुस्तक–आधारित संसाधनों को उन्नत डिजिटल उपकरणों और सेवाओं के साथ जोड़ते हैं। उनकी प्रासंगिकता ज्ञान भंडार से आगे बढ़कर सामुदायिक जुड़ाव, डिजिटल समावेशन और आजीवन सीखने के प्रमुख सूत्रधार बनने तक फैली हुई है (ऑडुनसन एट अल., 2019, मार्टजौको, 2021)। यह खंड डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिका, पुस्तकालय उपयोग के बदलते पैटर्न और रीवा जिले में सार्वजनिक पुस्तकालयों की विशिष्ट प्रासंगिकता का पता लगाता है।

डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिकाः

डिजिटल युग ने सार्वजनिक पुस्तकालयों की भूमिका में क्रांतिकारी बदलाव किया है, उन्हें स्थिर सूचना भंडार से बदलकर ज्ञान तक पहुँचने और उत्पादन के लिए गतिशील स्थान बना दिया है। पुस्तकालय अब ई–पुस्तकों, ऑनलाइन डेटाबेस और मल्टीमीडिया टूल सहित डिजिटल संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करते हैं, जो उपयोगकर्ताओं की विविध आवश्यकताओं को पूरा करते हैं (मेहता और वांग, 2020, मार्टजौको, 2021)। इस बदलाव ने पुस्तकालयों को वर्चुअल सेवाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से दूरदराज के स्थानों सहित व्यापक दर्शकों तक पहुँचने में सक्षम बनाया है। डिजिटल युग द्वारा लाए गए सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक सूचना का लोकतंत्रीकरण है। सार्वजनिक पुस्तकालय मुफ्त इंटरनेट एक्सेस और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम प्रदान करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वंचित समुदाय भी डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग ले सकते हैं (सियानेस एट अल., 2022, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021)। डिजिटल डिवाइड को पाटकर, पुस्तकालय सामाजिक और आर्थिक समानता के महत्वपूर्ण एजेंट बन गए हैं, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर सीमित है (रोमन एट अल., 2020, पिरियालम एट अल., 2019)। पहुँच के अलावा, पुस्तकालय डिजिटल सामग्री निर्माण और प्रसार के लिए केंद्र के रूप में काम करते हैं। कई सार्वजनिक पुस्तकालय अब 3डी प्रिंटर, डिजिटल एडिटिंग सॉफ्टवेयर और मेकर स्पेस जैसे उपकरण प्रदान करते हैं, जो उपयोगकर्ताओं को तकनीकी कौशल विकसित करने और अभिनव कार्य करने में सक्षम बनाते हैं (वान मोख्तार एट अल., 2023, ऑडुनसन एट अल., 2019)। ये पहल यूनेस्को के

पुस्तकालयों के आजीवन सीखने और रचनात्मकता के केंद्र के रूप में दृष्टिकोण के अनुरूप हैं, जो डिजिटल परिदृश्य में उनकी विकसित भूमिका पर जोर देते हैं (यूनेस्को, 2016, रोमन एट अल., 2020)।

1. डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से पहुंच

सार्वजनिक पुस्तकालय अब डिजिटल संसाधनों तक पहुँच प्रदान करते हैं, जैसे कि ई–पुस्तकें, ऑडियोबुक, ऑनलाइन डेटाबेस और मल्टीमीडिया उपकरण, जिससे उपयोगकर्ता किसी भी समय और कहीं भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ये संसाधन भौगोलिक बाधाओं को तोड़ते हैं, विशेष रूप से दूरदराज या वंचित क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों को लाभान्वित करते हैं। उदाहरण के लिए:

- **वर्चुअल लाइब्रेरी सेवाएँ:** कई पुस्तकालय ऑनलाइन कैटलॉग, डिजिटल उधार सेवाएं और अकादमिक डेटाबेस तक दूरस्थ पहुंच प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं को भौतिक यात्रा के बिना सामग्री तक पहुंचने की अनुमति मिलती है (मेहता और वांग, 2020)।
- **मोबाइल एप्लीकेशन:** पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार करने के लिए तेजी से मोबाइल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रहे हैं, जिसमें ई–लाइब्रेरी तक पहुंच, नियत तारीखों के लिए सूचनाएं और आभासी कार्यक्रमों में भागीदारी शामिल है (मार्टजौको, 2021)।

2. डिजिटल साक्षरता और डिजिटल विभाजन को पाटना

डिजिटल युग में सार्वजनिक पुस्तकालयों का सबसे बड़ा योगदान सूचना तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने में उनकी भूमिका है। निःशुल्क इंटरनेट कनेक्टिविटी और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करके, पुस्तकालय डिजिटल विभाजन को संबोधित करते हैं जो अक्सर आर्थिक रूप से वंचित आबादी को हाशिए पर डाल देता है:

- **डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम:** सार्वजनिक पुस्तकालय इंटरनेट नेविगेशन, साइबर सुरक्षा और वर्ड प्रोसेसिंग और स्प्रेडशीट जैसे डिजिटल उपकरणों पर कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं। ये कार्यक्रम व्यक्तियों को डिजिटल अर्थव्यवस्था में भाग लेने के लिए सशक्त बनाते हैं (सियानेस एट अल., 2022)।
- **ग्रामीण कनेक्टिविटी:** ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय डिजिटल पहुंच के महत्वपूर्ण बिंदु के रूप में काम करते हैं, जहां अन्य बुनियादी ढांचे उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय ''राष्ट्रीय डिजिटल

लाइब्रेरी'' जैसी पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शैक्षिक संसाधन दूरदराज के शिक्षार्थियों तक पहुँचें (रोमन एट अल., 2020)।

3. सामग्री निर्माण और नवाचार

पहुँच प्रदान करने के अलावा, पुस्तकालयों ने डिजिटल सामग्री के निर्माता और सुविधाकर्ता के रूप में भूमिकाएँ भी अपनाई हैं। सार्वजनिक पुस्तकालय अब निम्नलिखित की मेजबानी करते हैं:

- **मेकरस्पेस:** 3डी प्रिंटर, कोडिंग प्लेटफॉर्म और डिजिटल एडिटिंग सॉफ्टवेयर से लैस मेकरस्पेस उपयोगकर्ताओं को तकनीक के साथ प्रयोग करने और प्रोटोटाइप से लेकर मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों तक प्रोजेक्ट बनाने की अनुमति देते हैं (वान मोख्तार एट अल., 2023)।
- **मल्टीमीडिया क्रिएशन लैब्स:** पुस्तकालय वीडियो संपादन, पॉडकास्टिंग और ग्राफिक डिजाइन के लिए उपकरण प्रदान करते हैं, रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं और उपयोगकर्ताओं को अपने ज्ञान और कौशल को वैश्विक मंचों पर सांझा करने में सक्षम बनाते हैं।
- **नागरिक विज्ञान पहल:** पुस्तकालय डेटा संग्रह और विश्लेषण में उपयोगकर्ताओं को शामिल करने के लिए शोधकर्ताओं और स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग करते हैं, जलवायु अध्ययन और सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान जैसी परियोजनाओं में योगदान करते हैं (सिगारिनी एट अल., 2021)।

4. आजीवन सीखने के केंद्र के रूप में पुस्तकालय

डिजिटल संसाधनों का एकीकरण, पुस्तकालयों को आजीवन सीखने का केंद्र बनाने के यूनेस्को के दृष्टिकोण के अनुरूप है:

- **शैक्षिक पोर्टल:** पुस्तकालय बड़े पैमाने पर खुले ऑनलाइन पाठ्यक्रमों (एमओओसी), वेबिनार और ऑनलाइन प्रमाणपत्रों तक पहुंच प्रदान करते हैं, जो उपयोगकर्ताओं को जीवन के किसी भी चरण में कौशल बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हैं (यूनेस्को, 2016, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021)।
- **संस्थाओं के साथ सहयोग:** पुस्तकालय डिजिटल शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालयों और स्कूलों के साथ साझेदारी करते हैं, जैसे कि दूरस्थ ट्यूशन या विद्वानों के प्रकाशनों तक पहुंच (ऑडुनसन एट अल., 2019)।

5. समावेशिता और सुलभता

सार्वजनिक पुस्तकालयों ने भी समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी को अपनाया है, तथा विविध आवश्यकताओं वाले उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा किया है:

- **सहायक प्रौद्योगिकियाँ:** स्क्रीन रीडर, ब्रेल प्रिंटर और अनुकूली कीबोर्ड जैसे उपकरण दृष्टिबाधित और दिव्यांग उपयोगकर्ताओं को डिजिटल सामग्री तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं।
- **बहुभाषी संसाधन:** पुस्तकालय कई भाषाओं में डिजिटल अभिलेखागार और संसाधनों की मेजबानी करते हैं, बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी समाजों में समावेशिता को बढ़ावा देते हैं (मियांडा चिटुम्बो एट अल., 2021)।

6. डिजिटल एकीकरण के वैश्विक उदाहरण

पुस्तकालयों में डिजिटल सेवाओं की ओर बदलाव एक वैश्विक घटना है, तथा दुनिया भर में नवीन पद्धतियां उभर रही हैं:

- **सिंगापुर का एनएलबी मोबाइल ऐप:** एक मंच पर एकीकृत करता है, जिससे निर्बाध पुस्तकालय अनुभव मिलता है।
- **यूरोप का सार्वजनिक पुस्तकालय 2030 विजन:** नवाचार केन्द्रों के रूप में पुस्तकालयों पर ध्यान केंद्रित करना, डिजिटल समावेशन, रचनात्मक स्थानों और तकनीकी कंपनियों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देना।
- **भारत की राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी:** एक केंद्रीकृत मंच प्रदान करता है जहां छात्र, शोधकर्ता और शिक्षक विभिन्न विषयों में लाखों शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच सकते हैं (मेहता और वांग, 2020)।

7. चुनौतियाँ और अवसर

यद्यपि पुस्तकालयों ने डिजिटल युग को अपना लिया है, फिर भी चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

- **वित्तपोषण और बुनियादी ढांचा:** कई पुस्तकालयों में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में, उन्नत प्रौद्योगिकियों को लागू करने के लिए संसाधनों का अभाव है।

- **डिजिटल विभाजनः** पुस्तकालयों के प्रयासों के बावजूद, डिजिटल साक्षरता और पहुंच में महत्वपूर्ण अंतर बना हुआ है।
- **उपयोगकर्ता अनुकूलनः** सभी ग्राहक प्रौद्योगिकी के साथ सहज नहीं हैं, इसलिए उन्हें निरंतर शिक्षा और सहायता की आवश्यकता है।

डिजिटल युग में सार्वजनिक पुस्तकालय सूचना अंतराल को पाटने, आजीवन सीखने को बढ़ावा देने और नवाचार को प्रोत्साहित करने में अपरिहार्य हो गए हैं। डिजिटल उपकरणों, आभासी सेवाओं और समावेशी कार्यक्रमों के माध्यम से, वे ज्ञान को लोकतांत्रिक बनाने के अपने मिशन को पूरा करना जारी रखते हैं। जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी की भूमिका बढ़ती है, पुस्तकालयों को और अधिक अनुकूलन करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे तेजी से डिजिटल होती दुनिया में शैक्षिक और सामाजिक विकास में सबसे आगे रहें।

पुस्तकालय उपयोग के बदलते पैटर्न

तकनीकी प्रगति, उपयोगकर्ता की बदलती अपेक्षाओं और वैकल्पिक सूचना स्रोतों के प्रसार के कारण पिछले कुछ वर्षों में लोगों द्वारा पुस्तकालयों का उपयोग करने का तरीका काफी बदल गया है। परंपरागत रूप से, पुस्तकालयों का उपयोग मुख्य रूप से किताबें उधार लेने और शांत अध्ययन के लिए किया जाता था। हालाँकि, आधुनिक पुस्तकालयों ने अपनी पेशकशों में विविधता ला दी है, डिजिटल संसाधन, सामुदायिक कार्यक्रम और सहयोगी स्थान प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया है (मेहता और वांग, 2020, वान मोख्तार एट अल., 2023)। उदाहरण के लिए, पुस्तकालय अनुभवात्मक शिक्षा के केंद्र बन गए हैं, जो वित्तीय साक्षरता, कोडिंग और स्वास्थ्य जागरूकता जैसे विभिन्न विषयों पर कार्यशालाओं की मेजबानी करते हैं। ये कार्यक्रम व्यावहारिक, कौशल–आधारित सीखने के अवसरों की बढ़ती मांग को पूरा करते हैं (ऑडुनसन एट अल., 2019, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021)। साथ ही, ऑनलाइन संसाधनों की बढ़ती उपलब्धता के कारण पुस्तकालयों में भौतिक रूप से आने वालों की संख्या में कमी आई है, जिससे उन्हें ई–लेंडिंग प्लेटफॉर्म और अकादमिक डेटाबेस तक दूरस्थ पहुँच जैसी आभासी सेवाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित किया गया है (रोमन एट अल., 2020, पिरियालम एट अल., 2019)। इसके अलावा, पुस्तकालयों ने कामकाजी पेशेवरों, वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों सहित विविध उपयोगकर्ता समूहों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विकास किया है। उदाहरण के लिए, कई पुस्तकालय अब लचीले घंटे, डेकेयर सुविधाएँ और वरिष्ठ

नागरिकों के लिए समर्पित स्थान प्रदान करते हैं, जिससे सामुदायिक केंद्रों के रूप में उनकी अपील बढ़ जाती है (मार्टजौको, 2021, सिएनेस एट अल., 2022)। ये परिवर्तन पुस्तकालयों की अपने संरक्षकों की बदलती मांगों को पूरा करने में अनुकूलनशीलता को दर्शाते हैं, जो तेजी से बदलती दुनिया में उनकी निरंतर प्रासंगिकता सुनिश्चित करते हैं (यूनेस्को, 2016, रोमन एट अल., 2020)।

सेवाओं का विविधीकरण

आधुनिक पुस्तकालयों ने डिजिटल उपकरणों को शामिल करके और समुदाय–केंद्रित कार्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करके अपनी भूमिकाओं को फिर से परिभाषित किया है। पुस्तकालय अब अनुभवात्मक शिक्षा के लिए प्लेटफॉर्म के रूप में काम करते हैं, वित्तीय साक्षरता, कोडिंग, स्वास्थ्य जागरूकता और यहां तक कि रचनात्मक कला जैसे विषयों पर कार्यशालाओं और कार्यक्रमों की मेजबानी करते हैं। ये पहल विभिन्न आयु समूहों के बीच आजीवन सीखने को बढ़ावा देते हुए व्यावहारिक, कौशल–आधारित शिक्षा की बढ़ती मांग को संबोधित करती हैं (ऑडुनसन एट अल., 2019, वाल्वरडे–बेरोकोसो एट अल., 2021)। कौशल–निर्माण कार्यक्रमों के अलावा, पुस्तकालयों ने ई–पुस्तकों, ऑडियोबुक, ऑनलाइन अकादमिक पत्रिकाओं और मल्टीमीडिया डेटाबेस तक पहुँच सहित अभिनव सेवाओं को अपनाया है। इन डिजिटल संसाधनों ने पुस्तकालय के उपयोग की सुविधा और लचीलेपन को बढ़ाया है, खासकर दूरस्थ शिक्षार्थियों और पेशेवरों के लिए। उदाहरण के लिए, ई–लेंडिंग प्लेटफॉर्म का प्रसार और डेटाबेस तक दूरस्थ पहुँच उपयोगकर्ताओं को भौतिक यात्राओं की आवश्यकता के बिना पुस्तकालय सामग्री के साथ बातचीत करने की अनुमति देती है (रोमन एट अल., 2020, पिरियालम एट अल., 2019)।

शांत अध्ययन क्षेत्र से सहयोगात्मक केन्द्र तक

पुस्तकालयों के वास्तुशिल्प और कार्यात्मक डिजाइन भी विकसित हुए हैं। पारंपरिक शांत अध्ययन क्षेत्र अब सहयोगी स्थानों के साथ मौजूद हैं जो समूह चर्चा, टीमवर्क और इंटरैक्टिव सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। पुस्तकालयों ने मेकरस्पेस और डिजिटल इनोवेशन लैब जोड़े हैं, जो उपयोगकर्ताओं को 3डी प्रिंटर, वीडियो एडिटिंग सॉफ्टवेयर और कोडिंग प्लेटफॉर्म जैसे उपकरणों तक पहुँच प्रदान करते हैं। ये संसाधन आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं और एसटीईएम शिक्षा पर बढ़ते ध्यान के साथ तालमेल बिठाते हुए व्यावहारिक सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं (वान मोख्तार एट अल., 2023, अन्ना सिगारिनी एट अल., 2021)। साथ ही, पुस्तकालयों ने तटस्थ, समावेशी सामुदायिक स्थानों के रूप में अपनी भूमिका को बनाए रखा है जहाँ

विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग ज्ञान और विचारों को सांझा करने के लिए एक साथ आ सकते हैं। यह परिवर्तन न केवल शैक्षणिक आवश्यकताओं बल्कि व्यापक सामाजिक मुद्दों, जैसे नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देना और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में पुस्तकालयों की अनुकूलन क्षमता को रेखांकित करता है (ऑडुनसन एट अल., 2019)।

डिजिटल पहुंच का प्रभाव

डिजिटल तकनीकों के उदय ने पुस्तकालयों के संचालन और उनके उपयोगकर्ताओं की सेवा करने के तरीके पर गहरा प्रभाव डाला है। मुफ्त इंटरनेट एक्सेस और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के एकीकरण ने पुस्तकालयों को डिजिटल विभाजन को पाटने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले के रूप में स्थापित किया है, खासकर वंचित समुदायों में। कई ग्रामीण पुस्तकालय अब प्रौद्योगिकी पहुँच बिंदुओं के रूप में कार्य करते हैं, जो उन व्यक्तियों के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन और प्रशिक्षण सत्र प्रदान करते हैं जिनके पास अन्यथा इन संसाधनों की कमी हो सकती है (मेहता और वांग, 2020, यूनेस्को, 2016)। पुस्तकालय नागरिक विज्ञान पहलों का भी समर्थन करते हैं, जहाँ उपयोगकर्ता पर्यावरण निगरानी या सार्वजनिक स्वास्थ्य अध्ययन जैसे शोध परियोजनाओं में योगदान करते हैं। ये कार्यक्रम न केवल वैज्ञानिक जांच को प्रोत्साहित करते हैं बल्कि सामुदायिक जिम्मेदारी और भागीदारी की भावना को भी बढ़ावा देते हैं (सिगारिनी एट अल., 2021)।

उपयोगकर्ता जनसांख्यिकी के लिए अनुकूलन

पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं की बदलती जनसांख्यिकी ने उनके विकास को और अधिक प्रभावित किया है। पुस्तकालय अब निम्नलिखित की सेवा करते हैं:

- कार्यरत पेशेवरः लचीले घंटे और ऑनलाइन संसाधन प्रदान करके जो कैरियर विकास में सहायता करते हैं।
- वरिष्ठ नागरिकों, बड़े प्रिंट वाली पुस्तकें, ऑडियोबुक और सामुदायिक कार्यक्रम जैसी सुलभ सामग्री उपलब्ध कराना जो सामाजिक अलगाव को कम करता है।
- बच्चे और परिवार, कहानी सुनाने के सत्र, साक्षरता कार्यक्रम और बच्चों के लिए समर्पित क्षेत्र जो प्रारंभिक शिक्षा और माता–पिता की भागीदारी को पोषित करते हैं (मार्टजौको, 2021, सियानेस एट अल., 2022)।

भौतिक मुलाकातों में कमी और आभासी जुड़ाव में वृद्धि

ऑनलाइन संसाधनों की उपलब्धता के कारण पुस्तकालयों में भौतिक रूप से आने वालों की संख्या में कमी आई है, लेकिन पुस्तकालयों ने अपनी आभासी उपस्थिति को बढ़ाकर इसकी भरपाई की है। आभासी पुस्तकालय सेवाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो निम्न सुविधाएँ प्रदान करती हैं:

- मोबाइल ऐप और वेब प्लेटफॉर्म के माध्यम से डिजिटल उधार।
- आभासी कार्यशालाएं, वेबिनार और ऑनलाइन शिक्षण पाठ्यक्रम।
- शैक्षिक प्लेटफार्मों के साथ एकीकरण, छात्रों और शिक्षकों के लिए शैक्षणिक संसाधनों तक निर्बाध पहुंच को सक्षम करना (रोमन एट अल., 2020, मेहता और वांग, 2020)।

उदाहरण के लिए, कोविड–19 महामारी के दौरान, दुनिया भर के पुस्तकालयों ने ई–संसाधनों तक पहुँच प्रदान करके और ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित करके शैक्षिक निरंतरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (मार्टजौको, 2021)। इस बदलाव ने हाइब्रिड मॉडल के महत्व को उजागर किया जो उपयोगकर्ता की मांगों को प्रभावी ढंग से पूरा करने के लिए भौतिक और डिजिटल सेवाओं को मिलाते हैं।

चुनौतियाँ और अवसर

अपनी अनुकूलन क्षमता के बावजूद, पुस्तकालयों को तेजी से बदलती दुनिया की जरूरतों को पूरा करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आम मुद्दों में शामिल हैं:

- सीमित वित्तपोषण और पुराना बुनियादी ढांचा: विशेषकर ग्रामीण और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में।
- डिजिटल असमानता, जहां कुछ आबादी के पास ऑनलाइन संसाधनों का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए कौशल या उपकरणों का अभाव है।
- उपयोगकर्ता की बदलती अपेक्षाएँ: जिससे पुस्तकालयों को निरंतर नवाचार करने और अपनी पेशकश का विस्तार करने की आवश्यकता होती है।

साथ ही, ये चुनौतियाँ पुस्तकालयों के लिए शैक्षणिक संस्थानों, सरकारों और निजी संगठनों के साथ सहयोग करने के अवसर प्रस्तुत करती हैं। सार्वजनिक–निजी भागीदारी और अनुदान कार्यक्रम जैसी पहल

पुस्तकालयों को उन्नत तकनीक हासिल करने, अपने डिजिटल संग्रह का विस्तार करने और अपनी भौतिक सुविधाओं को बढ़ाने में मदद कर सकती हैं (पिरियालम एट अल., 2019, बुरहानसब एट अल., 2020)।

पुस्तकालय के उपयोग के बदलते पैटर्न तकनीकी प्रगति, उपयोगकर्ता की जरूरतों और सामाजिक परिवर्तनों के जवाब में उनके निरंतर विकास को दर्शाते हैं। आधुनिक पुस्तकालय अब शांत अध्ययन स्थानों तक सीमित नहीं हैं, वे सीखने, सहयोग और सामुदायिक जुड़ाव के लिए गतिशील, समावेशी और अभिनव केंद्र हैं। डिजिटल उपकरणों को अपनाने, अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने और विविध जनसांख्यिकी की जरूरतों को पूरा करने के जरिए, पुस्तकालयों ने 21वीं सदी में अपरिहार्य संस्थानों के रूप में अपनी भूमिका को पुख्ता किया है। उनकी निरंतर प्रासंगिकता विकास और नवाचार के अवसरों को जब्त करते हुए चुनौतियों के अनुकूल होने की उनकी क्षमता पर निर्भर करती है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में सार्वजनिक पुस्तकालय केवल पारंपरिक ज्ञान भंडार नहीं रहे, बल्कि वे सामुदायिक जुड़ाव, डिजिटल समावेशन और नवाचार के केंद्र बन गए हैं। डिजिटल तकनीकों के समावेश ने पुस्तकालयों को ई–पुस्तकों, ऑनलाइन डेटाबेस और मेकरस्पेस जैसी सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम बनाया है, जिससे वे आजीवन सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। निःशुल्क इंटरनेट, डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम और वंचित समुदायों के लिए विशेष पहलें, पुस्तकालयों को डिजिटल विभाजन को पाटने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनाती हैं। इसके साथ ही, पुस्तकालय अनुभवात्मक शिक्षा, कौशल निर्माण और सामुदायिक विकास को भी प्रोत्साहित करते हैं। हालांकि, सीमित वित्तपोषण, डिजिटल असमानता और उपयोगकर्ता की बदलती अपेक्षाएँ चुनौतियाँ बनी हुई हैं, लेकिन पुस्तकालयों की अनुकूलनशीलता और नवाचार की क्षमता इन बाधाओं को दूर करने की संभावना रखती है। 21वीं सदी के पुस्तकालय अब शिक्षा, सामाजिक समावेश और नवाचार के क्षेत्र में अपरिहार्य भूमिका निभा रहे हैं। उनकी प्रासंगिकता इस बात पर निर्भर करेगी कि वे बदलते समय और प्रौद्योगिकी के साथ खुद को कितना प्रभावी ढंग से ढाल सकते हैं। इस प्रकार, सार्वजनिक पुस्तकालय तेजी से डिजिटल होती दुनिया में शैक्षिक और सामाजिक प्रगति के मुख्य वाहक बने रहेंगे।

संदर्भ

- बुरहानसब , पी.ए., सादिक बच्च , एम., अहमद, एम., और बच्च , एस. (2020)। सोलापुर विश्वविद्यालय के चयनित कॉलेजों में पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं द्वारा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के बारे में जागरूकता और उपयोग की जांच करना। लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई–जर्नल)।
- चेट्टी, एल.आर. (2012)। 21वीं सदी में विकासशील दुनिया में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका। नैतिकता और उभरती हुई प्रौद्योगिकी संस्थान। नैतिक प्रौद्योगिकी । 3 दिसंबर, 2018
- डिलमैन, डीए, स्मिथ, जेडी, और क्रिश्चियन, एलएम (2014)। इंटरनेट, फोन, मेल और मिक्स्ड–मोड सर्वेक्षणः टेलर्ड डिजाइन विधि। विले।
- मेहता, डी., और वांग, एक्स. (2020). कोविड–19 और डिजिटल लाइब्रेरी सेवाएँः एक विश्वविद्यालय पुस्तकालय का केस स्टडी। डिजिटल लाइब्रेरी परिप्रेक्ष्य, 36(4), 351–363.
- ओनूओहा, जे.सी., इफियानी , एल.यू., और यूनिसा, ए.वाई. (2020)। दक्षिण–पूर्व नाइजीरिया में सामाजिक अध्ययन स्नातक छात्रों द्वारा प्रभावी शोध आउटपुट के लिए विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई–संसाधनों की उपलब्धता और उपयोग। लाइब्रेरी फिलॉसफी एंड प्रैक्टिस (ई–जर्नल), 4489।
- पांडा, एस. (2024). अकादमिक पुस्तकालयों में ई–संसाधन उपयोग के आँकड़ों का अध्ययन क्यों आवश्यक है? एक लाइब्रेरियन का दृष्टिकोण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्फॉर्मेशन स्टडीज एंड लाइब्रेरीज, 9(1)।
- रुबिन, आर.ई., और रुबिन, आर.जी. (2020)। लाइब्रेरी और सूचना विज्ञान की नींव। अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन।